



पत्र-पुष्प



“ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखते अपनी अचल-अडोल स्थिति बनाने की विशेष प्रेरणायें”

(याद पत्र 15-3-21)

परमप्यारे शिव भोलानाथ बाप के अति स्नेही, सदा ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो देखते, एक बल और एक भरोसे के आधार पर सदा निश्चित और अचल अडोल स्थिति में रह सभी को एकरस श्रेष्ठ स्थिति का अनुभव कराने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व बाबा के अनमोल रत्न, ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस बार की यह 85 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती तो यज्ञ इतिहास में एक नये प्रकार की सीन लेकर आई, जो आप सबने साक्षी होकर देखी। वैसे तो सभी तरफ बहुत-बहुत उमंग-उत्साह से सेवाओं के कार्यक्रम चल रहे थे। सभी स्थानों पर शिव भोलानाथ बाप के शिव अवतरण का सन्देश देने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवायें चल रही थी। सभी मीठे बाबा की याद में शिव ध्वज भी फहरा रहे थे लेकिन अचानक दादी गुल्जार जी के अव्यक्त होने का समाचार सभी तरफ पहुंचा तो चारों ओर वही लहर छा गई। कुछ मुख्य भाई बहिनें दादी जी को अन्तिम विदाई देने शान्तिवन पहुंचने लगे। 13 तारीख को सभी ने दादी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि देते अन्तिम विदाई दी। जो दृश्य तो आप सब साइंस के साधनों द्वारा देख ही रहे थे। यह भी ड्रामा की भावी कहें जो हमारी तीनों ही बड़ी दादियां अव्यक्त स्वरूपा बन बाबा की बेहद सेवा निमित्त अव्यक्त-वतनवासी बन गई।

अब मीठे बाबा को किस प्रकार विश्व कल्याण की बेहद सेवायें करानी हैं, वह तो हम सब देखते, अनुभव करते रहेंगे। अभी तो दादी जी के निमित्त विशेष मधुबन में 13 दिन तक भोग लगेगा। उसके बाद फिर हमारी मीठी दादी जानकी जी का पहला स्मृति दिन भी आ रहा है, 27 मार्च को लॉक डाउन के समय दादी जानकी जी का जाना भी पूरे ब्राह्मण परिवार के लिए एक नये प्रकार का पाठ था। उनके निमित्त भी सब जगह भोग का कार्यक्रम रहेगा।

अभी मीठे बाबा की यह ऑनलाइन मिलन की अव्यक्ति सीजन भी सम्पन्नता की ओर है। एक लास्ट टर्न तामिलनाडु ज़ोन का अभी आने वाला है। फिर तो अपने तीनों ही स्थानों पर शक्तिशाली योग भट्टियों के कार्यक्रम चलते रहेंगे। बाबा हम बच्चों को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने के लिए यह भी गोल्डन चांस दे रहे हैं। इस वर्ष सभी तरफ विशेष तपस्या ही करनी है, उसकी प्वाइंट्स तो आपके पास पहुंच ही रही हैं। ड्रामा के हर दृश्य को बहुत-बहुत साक्षी दृष्टा बन देखते अपनी अचल-अडोल एकरस स्थिति द्वारा प्यारे बापदादा की पालना का रिटर्न करना है। अब अपनी ऊंची चलन और खुशनुमा चेहरे द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा करनी है। अभी तक जो भी स्थापना का कार्य बाकी रहा हुआ है, वह हम सबको मिलकर पूरा करना है।

अभी सब प्रकार की हदों के किनारे छोड़ बेहद की वैराग्य वृत्ति में रह विशेष तपस्या करनी है। यह वैराग्य वृत्ति ही परिवर्तन का आधार है। बाबा ने हम बच्चों को स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का पाठ शुरू से ही पढ़ाया है।

तो जरूर आप सब स्व-चिंतन, शुभचिंतन करते, शुभ भावना शुभ कामना से सम्पन्न बन स्व-कल्याण और विश्व कल्याण का श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न करेंगे। अच्छा - सभी को याद..

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



अप्रैल 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

(अ) अशरीरी स्थिति में रहने का अभ्यास बढ़ाओ

1) अशरीरी बनना अर्थात् आवाज़ से परे हो जाना। शरीर है तो आवाज़ है। शरीर से परे हो जाओ तो साइलेंस। एक सेकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आये और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। कार्य प्रति शारीरिक भान में आयें फिर सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें, जब यह ड्रिल पक्की होगी तब सभी परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे।

2) जैसे बापदादा अशरीरी से शरीर में आते हैं वैसे ही बच्चों को भी अशरीरी हो करके शरीर में आना है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर फिर व्यक्त में आना है। जैसे इस शरीर को छोड़ना और शरीर को लेना, यह अनुभव सभी को है। ऐसे ही जब चाहो तब शरीर का भान छोड़कर अशरीरी बन जाओ और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करो। बिल्कुल ऐसे ही अनुभव हो जैसे यह स्थूल चोला अलग है और चोले को धारण करने वाली मैं आत्मा अलग हूँ।

3) वैसे अशरीरी होना सहज है लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के झंझट सामने हों, कोई हलचल में लाने वाली परिस्थितियाँ हों, ऐसे समय में सोचा और अशरीरी हो जाएं, इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिए। सोचना और करना साथ-साथ चले तब अन्तिम पेपर में पास हो सकेंगे।

4) एक सेकेण्ड में चोले से अलग तभी हो सकेंगे जब किसी भी संस्कारों की टाइटनेस नहीं होगी। जैसे कोई भी चीज़ अगर चिपकी हुई होती है तो उनको खोलना मुश्किल होता है। हल्के होने से सहज ही अलग हो जाते हैं। वैसे ही अगर अपने संस्कारों में ज़रा भी इज़ीपन नहीं होगा तो फिर अशरीरीपन का अनुभव कर नहीं सकेंगे इसलिए इज़ी और एलर्ट रहो।

5) जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने के लिए ग्लूकोज़ चढ़ाते हैं, ऐसे जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हो तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है, उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है।

6) अभ्यास करो - देह और देह के देश को भूल अशरीरी परमधाम निवासी बन जाओ, फिर परमधाम निवासी से अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाओ, फिर सेवा के प्रति आवाज़ में आओ,

सेवा करते हुए भी अपने स्वरूप की स्मृति में रहो, अपनी बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ एक सेकेण्ड से भी कम समय में लगा लो तब पास विद आनर बनेंगे।

7) जैसे एक सेकेण्ड में स्वीच ऑन और ऑफ किया जाता है, ऐसे ही एक सेकेण्ड में शरीर का आधार लिया और एक सेकेण्ड में शरीर से परे अशरीरी स्थिति में स्थित हो गये। अभी-अभी शरीर में आये, अभी-अभी अशरीरी बन गये, आवश्यकता हुई तो शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, आवश्यकता न हुई तो शरीर से अलग हो गये। यह प्रैक्टिस करनी है, इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।

8) बापदादा अचानक डायरेक्शन दे कि इस शरीर रूपी घर को छोड़, देह-अभिमान की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीटहोम में चले जाओ तो जा सकते हो? युद्ध स्थल में युद्ध करते-करते समय तो नहीं बिता देंगे! अशरीरी बनने में अगर युद्ध करने में ही समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आयेगा!

9) जैसे हठयोगी अपने श्वास को जितना समय चाहें उतना समय रोक सकते हैं। आप सहजयोगी, स्वतः योगी, सदा-योगी, कर्मयोगी, श्रेष्ठ-योगी अपने संकल्प को, श्वास को प्राणेश्वर बाप के ज्ञान के आधार पर जो संकल्प, जैसा संकल्प जितना समय करना चाहो उतना समय उसी संकल्प में स्थित हो जाओ। अभी-अभी शुद्ध संकल्प में रमण करो, अभी-अभी एक ही लगन अर्थात् एक ही बाप से मिलन की, एक ही अशरीरी बनने के शुद्ध-संकल्प में स्थित हो जाओ।

10) अब संगठित रूप में एक ही शुद्ध संकल्प अर्थात् एकरस स्थिति बनाने का अभ्यास करो तब ही विश्व के अन्दर शक्ति सेना का नाम बाला होगा। जब चाहे शरीर का आधार लो और जब चाहे शरीर का आधार छोड़कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जाओ। जैसे शरीर धारण किया वैसे ही शरीर से न्यारे हो जायें, यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नम्बर लाने का आधार है।

11) अशरीरी स्थिति का अनुभव करने के लिए सूक्ष्म संकल्प रूप में भी कहाँ लगाव न हो, सम्बन्ध के रूप में, सम्पर्क के रूप में अथवा अपनी कोई विशेषता की तरफ भी लगाव न हो। अगर

अपनी कोई विशेषता में भी लगाव है तो वह भी लगाव बन्धन-युक्त कर देगा और वह लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।

12) जितना अव्यक्त लाइट रूप में स्थित होंगे, उतना शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी अशरीरी बन जायेंगे, तो मानों जैसेकि चार घण्टे का आराम कर लिया। ऐसा समय आयेगा जो नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जायेंगे और शरीर को आराम मिल जायेगा। लाइट स्वरूप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में भी लाइट रूप हो जायेंगे।

13) अशरीरी बनने के लिए समेटने की शक्ति बहुत आवश्यक है। अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह के दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को, अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो – बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। अनुभव करो कि मैं आत्मा

इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, इसके लिये अब से अकाल तख्तनशीन होने का अभ्यास बढ़ाओ।

14) अशरीरी बनना वायरलेस सेट है। वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। जरा भी अंश के भी अंशमात्र विकार वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा इसलिए अब कर्मबन्धनी से कर्मयोगी बनो। अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बन्ध में समझो तो सदा एवररेडी रहेंगे।

15) कितना भी कार्य की चारों ओर की खींचतान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिज़ी हो – ऐसे टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करके देखो। यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नहीं क्योंकि योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं कि सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। याद रखो मेरी सेवा नहीं बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। ‘ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ’ ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो।

(ब) एकाग्रता के अभ्यास द्वारा ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखाओ

16) कोई भी कार्य करते व पार्ट बजाते सागर समान ऊपर से भले हलचल दिखाई दे लेकिन अन्दर की स्थिति नथिंग न्यू की हो। रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले त्रिकालदर्शी आराम से शान्ति की स्टेज पर ऐसे स्थित हो जाएं जो कोई भी कर्मेन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को हिला न सके।

17) जब आत्मिक शक्ति वाली, सेमी प्योर आत्मायें अपनी साधना द्वारा आत्माओं का आह्वान कर सकती हैं, अल्पकाल के साधनों द्वारा दूर बैठी हुई आत्माओं को चमत्कार दिखाकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती हैं, तो परमात्म शक्ति अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शक्ति क्या नहीं कर सकती परन्तु इसके लिए विशेष एकाग्रता का अभ्यास चाहिए।

18) जैसे शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज़ हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र दिखाते हैं, ऐसे चैतन्य रूप में एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, तब रूह, रूह का आह्वान करके रुहानी सेवा कर सकेगी।

19) अभी तक वाचा और कर्मणा की सेवा में जो तेरी-मेरी का, नाम, मान, शान का, स्वभाव, संस्कार का टकराव होता है, समय व सम्पत्ति का अभाव होता है, यह सर्व विघ्न एकाग्रता के अभ्यास द्वारा मन्सा सेवा करने से सहज समाप्त हो जायेंगे। रुहानी सेवा का एक संस्कार बन जायेगा।

20) जो भी आत्मायें वाणी द्वारा व प्रैक्टिकल लाईफ के प्रभाव

द्वारा सम्पर्क में आई हैं, वा सम्पर्क में आने के उम्मीदवार हैं, उन आत्माओं को रुहानी शक्ति का अनुभव कराओ। जैसे भक्त लोग स्थूल भोजन का व्रत रखते हैं, तो सर्विसएबुल ज्ञानी तू आत्माओं को व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना है तब आत्माओं को ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखा सकेंगे।

21) अभी एकाग्रता का दृढ़ संकल्प करने वाला ग्रुप तैयार होना चाहिए, जो सागर के तले में जाकर अनुभव के हीरे, मोती लेकर आये। लहरों में लहराने का अनुभव तो किया अब अन्दर तले में जाना है। अमूल्य खजाने तले में मिलते हैं, इससे आटोमेटिक सब बातों से किनारा हो जायेगा।

22) एकाग्रता की शक्ति बहुत विचित्र रंग दिखा सकती है। एकाग्रता से ही सिद्धियां प्राप्त होती हैं। स्वयं की औषधि भी एकाग्रता की शक्ति से कर सकते हैं। अनेक रोगियों को निरोगी भी बना सकते हैं। कोई ने चलती हुई चीज़ को रोका, यह एकाग्रता की सिद्धि है। स्टॉप कहो तो स्टॉप हो जाए तब वरदानी रूप में जय-जयकार के नारे बजेंगे।

23) बुद्धि की एकाग्रता से परखने की शक्ति आयेगी। इसके लिए व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक में सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति चाहिए। अगर अनेक रसों में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है, तो परखने की शक्ति कम हो जाती है और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है। यह

माया है, यह भी पहचान नहीं सकते। यह रांग है, यह भी जान नहीं सकते।

24) वर्तमान समय विश्व कल्याण करने का सहज साधन अपने श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा, सर्व आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को एकाग्र करना है। सारे विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। यह विश्व की मांग वा चाहना तब पूरी कर सकेंगे जब एकाग्र होने का अभ्यास होगा।

25) एकाग्रता अर्थात् सदा एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का विशेष अभ्यास करो। उसके लिए एक तो व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। दूसरा माया के आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लगन के आधार से सहज समाप्त करते, कदम को आगे बढ़ाते चलो।

26) बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनमनाभव के मंत्र को सदा स्मृति में रखो। मनमनाभव के मंत्र की प्रैक्टिकल धारणा से पहला नम्बर आ सकते हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है। अभी अपने को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षणों के वायब्रेशन से अन्तर्मुख बनो। अब यही अभ्यास काम में आयेगा।

27) मन्सा सेवा करने के लिए सदा एकाग्रता का अभ्यास चाहिए। इसके लिए व्यर्थ समाप्त हो, सर्व शक्तियों का अनुभव जीवन का अंग बन जाये। जैसे बाप परफेक्ट है ऐसे बच्चे भी बाप समान हों, कोई डिफेक्ट न हो।

28) एकाग्रता अर्थात् एक ही श्रेष्ठ संकल्प में सदा स्थित रहना। जिस एक बीज रूपी संकल्प में सारा वृक्ष रूपी विस्तार समाया हुआ है। एकाग्रता को बढ़ाओ तो सर्व प्रकार की हलचल समाप्त हो जायेगी। एकाग्रता के आधार पर जो वस्तु जैसी है, वैसी स्पष्ट देखने में आयेगी। ऐसी एकाग्र स्थिति में स्थित होने वाला स्वयं जो है, जैसा है अथवा जो वस्तु जैसी है वैसी स्पष्ट अनुभव होगी।

29) आजकल की दुनिया में राजनीति की हलचल, वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल – ऐसे सर्व प्रकार की हलचल से हर एक तंग आ गये हैं। इससे बचने के लिए एकाग्रता को अपनाओ, एकान्तवासी बनो। एकान्तवासी बनने से एकाग्र सहज ही हो जायेंगे।

30) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है - माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

सहनशक्ति को धारण कर लो तो क्रोध का नाम निशान खत्म हो जायेगा (दादी गुल्जार, रिवाइज क्लास - 2005)

बाबा ने हमें यही शिक्षा दी है कि कहना और करना समान हो। चलते फिरते हमारी ट्रेड मार्क ही ओम् शान्ति है ना। ओम् शान्ति शब्द जब भी कहते हैं तो उस समय उस स्वरूप में स्थित हो जाएं। यही बाबा की हम सब बच्चों के प्रति शिक्षा भी है और प्यार भी है क्योंकि बाबा यही चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा बनें। अज्ञानकाल में भी ऐसे सोचते कहते हैं लेकिन राजा बनते नहीं हैं। बाबा ने तो हम हरेक को इस समय ही स्वराज्य अधिकारी बना दिया है। तो सभी राजे हो या परवश हो जाते हो? क्योंकि हम सर्वशक्तिवान बाबा के बच्चे हैं, तो बाबा की जो प्रॉपर्टी है, वो है ही सर्वशक्तियाँ। यही हमारी जायदाद है, जन्मसिद्ध अधिकार है। हमें यह ईश्वरीय नशा रहता है कि हमारा बाबा सर्वशक्तिवान है और हम उन सर्वशक्तियों के बालक सो

मालिक हैं! यह नशा सदा रहता है या कभी-कभी रहता है?

अभी हम ऐसे ऊंचे बेहद बाबा के बच्चे तो बन गये लेकिन यह चेक करना है कि जो हमको बाबा ने जन्मसिद्ध अधिकार दिया है, वो हमने प्रैक्टिकल लाइफ में यूज किया है? क्योंकि हम सभी बच्चों को बाबा ने कहा है कि विश्व का कल्याण करना है, तो जो शक्तियाँ बाबा से मिली हैं वो औरों को बाँटनी हैं। जायदाद सम्भालने का भी अक्ल होना चाहिए। हम बाबा की जायदाद को कितना अपना बना करके स्व प्रति और विश्व प्रति कार्य में लगा रहे हैं? अगर हम कार्य में लगाते हैं तो हमको मेहनत नहीं करनी पड़ती है। कई बार योग टूटता है फिर जोड़ने की मेहनत करते हैं। अभी-अभी योगी होंगे, अभी-अभी थोड़ा कम हो जायेंगे, उसकी जरूरत ही नहीं है क्योंकि हम अपने प्रति भी यूज कर रहे

हैं और दूसरों को भी दे रहे हैं, तो मन बिजी हो गया ना। मन में ही टेन्शन होता है। हमारे बाबा को भी मन ही चाहिए। मन, मनमनाभव है तो बाबा के मिलन का अनुभव कर सकते हैं। स्वस्थिति हमारी तब बन सकती है जब बाबा ने जो सर्वशक्तियाँ दी हैं वो समय पर काम में आये। याद तो रहती है लेकिन यह चेक करें कि जिस समय जो शक्ति चाहिए उस समय वो शक्ति हम यूज कर सकते हैं? वो शक्ति काम में लगती है? क्योंकि अगर समय पर यूज न हो तो किस काम की?

अगर सर्वशक्तियों के हम मालिक हैं तो ये हमारे ऑर्डर में होनी चाहिए। बाबा कहते हैं हे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे! आप मालिक होके जिस शक्ति की आवश्यकता है, उन शक्तियों को ऑर्डर करो। जैसे जहाँ सहनशक्ति है वहाँ क्रोध नहीं आयेगा। बाबा कहते हैं सहनशक्ति धारण कर लो तो क्रोध का नाम-निशान ही नहीं रहेगा। क्रोध है धुआँ और क्रोध नहीं है तो दुआ। तो धुआँ नहीं निकालना है लेकिन दुआ देनी है। दुआ दो और दुआ लो। दुःख दो भी नहीं और लो भी नहीं। जो दुःख लेगा नहीं वह देगा भी नहीं। तो किसी भी बात में फीलिंग आना माना फेल होना। जो घड़ी-घड़ी फेल होगा वो लास्ट में क्या पास होगा? तो पहले अपने ऊपर रहम करो क्योंकि बाबा कहते हैं तुम्हारे जड़ चित्रों से भी भक्त लोग दुआ मांगते हैं। आप तो चैतन्य ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनने वाले हो। तो चैतन्य में कितना मसीफल स्वरूप होना चाहिए।

इस ब्राह्मण जीवन की बहुत विशेषतायें हैं। चलो, सतयुग में हम देवता बन जायेंगे, हमारा राज्य हो जायेगा लेकिन शिवबाबा नहीं होगा, अभी तो बापदादा दोनों हमारे साथ हैं। और जैसे अभी हमारे ब्राह्मण जीवन में अनुभव होता है, कल दुःखी थे, आज सुखी हो गये। कल विकारी थे, आज निर्विकारी हो गये। दुःख क्या है, सुख क्या है, दोनों का कान्स्ट्रास्ट पता है और वहाँ तो दुःख का नाम-निशान ही नहीं होगा। हाँ, सुखी जरूर होंगे। लेकिन अभी हम ज्यादा नॉलेजफुल हैं, सारे चक्र की नॉलेज अभी ब्राह्मण जीवन में इमर्ज है। वहाँ तो मर्ज हो जायेगी। अगर कोई संकल्प आ भी जाये, तो उसको कहना ठहर करके पीछे आना।

अभी व्यर्थ संकल्पों की ट्रॉफिक को कन्ट्रोल करो क्योंकि कोई कोई कहते हैं कि अभी खराब संकल्प तो नहीं चलते हैं लेकिन व्यर्थ चल जाते हैं। तो व्यर्थ संकल्प जो चलते हैं उसको मिटाने की युक्ति बहुत इजी है। अगर आपको मनन करना आता है, यह शक्ति आपके पास है, तो व्यर्थ थॉट्स सहज खत्म हो जायेंगे। मनन क्या करना है? बाबा की मीठी-मीठी मुरली पर ही मनन करो इसलिए बाबा कहता है कि एक दिन भी मुरली मिस नहीं करो। अगर कोई मजबूरी नहीं है तो शाम के या रात्रि क्लास

के बजाए सवेरे का क्लास जरूर करो। अमृतवेला फाउण्डेशन है क्योंकि सारे दिन का आरम्भ होता है। अमृतवेला तो कोई भी ब्राह्मण कुछ बहाना नहीं दे सकता है। अपना ही टाइम है। मुरली शुद्ध संकल्पों का खजाना है। अगर व्यर्थ संकल्प आता भी है, तो मुरली की प्वाइन्ट अगर आपके अटेन्शन में होगी और उसे स्मृति में लाके मनन करेंगे तो आपका मन उसमें बिजी हो जायेगा, इससे व्यर्थ संकल्पों का फोर्स खत्म हो जायेगा। जैसे यहाँ अन्धकार हो जाए तो स्वीच ऑन करने से रोशनी हो जाती है ना। ऐसे यह शुद्ध यानी ज्ञान की प्वाइन्ट्स, संकल्पों की स्मृति जो है वो व्यर्थ को खत्म कर देती है।

ऐसे मननशक्ति जिसको बाबा कहते हैं विचार सागर मंथन, यह भी बहुत आवश्यक है क्योंकि 63 जन्म के संस्कार हैं ना। कई बार कामकाज में जाते कर्म कॉन्सेस हो जाते हैं और कोई संकल्प नहीं चलता लेकिन जो काम करते हैं उसी के ही संकल्प में रहते हैं। कर्म के ही स्मृति में रहते हैं लेकिन बाबा ने तो कहा है कि तुम सिर्फ कर्म नहीं करो लेकिन कर्म के साथ योग भी हो, इसके लिए कर्मयोगी बनके कर्म करो। बाबा ने हमारा टाइटल कर्मयोगी रखा है, सिर्फ कर्म करने वाले नहीं। कर्म करो लेकिन कर्म कराने वाला मैं आत्मा हूँ, यह याद रहे। कर्म करते अपना मालिकपन न भूले। कराने वाला डायरेक्टर अच्छा होगा तो वर्कर जो हैं वो और ही अच्छी तरह से काम करते हैं। अगर हमको याद रहे कि मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ, तो इस स्मृति से कर्मेन्द्रियाँ धोखा नहीं देंगी। कोई डायरेक्टर ढीला होता है तो वर्कर भी ठीक काम नहीं करते। तो मैं आत्मा करावनहार हूँ, यह स्मृति रखेंगे तो आत्मा को परमात्मा स्वतः ही याद आयेगा। यह सब देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थ देह के साथ हैं लेकिन आत्मा के लिए सिवाए परमात्मा के और कोई नहीं है। तो करावनहार बनकर कर्म करो इसको कहते हैं कर्मयोगी। मालिक होके हाथ पाँव चलाओ तो काम और ही अच्छा होगा। सिर्फ बीच-बीच में चेकिंग करो ऐसे नहीं रात्रि को पोतामेल देखो। कम से कम दिन में 10 बारी चेकिंग अवश्य करो। 5 बारी ट्रॉफिक कन्ट्रोल का समय, फिर 5 बारी खाने-पीने का टाइम....उसमें चेकिंग कर सकते हो। बीच-बीच में चेक करने से अपने को चेन्ज कर लेना सहज हो जाता है। सिर्फ रात्रि को ही चेकिंग करने से हमारे हाथ से संगम का समय वेस्ट जाता है। संगम का यह समय सारे कल्प में अभी ही मिलता है इसीलिए बाबा कहता है यह स्लोगन हमेशा याद रखो, अब नहीं तो कब नहीं। जो करना है वो अब कर लो...। क्योंकि अन्त का टाइम है, इसे अच्छा बनाओ तो फिर आदि से लेके अन्त तक श्रेष्ठ ही रहेंगे। और यहाँ तो अचानक का पेपर होना है, कब किसका अन्त हो पता नहीं, तो एवररेडी रहना आवश्यक है।

समस्याओं को समस्या नहीं पेपर समझो तो डरेंगे नहीं। जितना हम आगे जाते हैं उतनी समस्याएं उस रूप से आयेंगी। यह पहले से ही बाबा ने सुनाया है कि माया आती रहेगी इसलिए इससे घबराना नहीं है। सागर है वहाँ लहरें तो आयेंगी। हमें उस लहर को पार करने, मनोरंजन मनाने की कला आनी चाहिए। बाकी समस्या आवे ही नहीं, यह कैसे होगा? अरे! हम सर्वशक्तिवान के बच्चे मा० सर्वशक्तिवान हैं, हम मालिक बनकर रहेंगे तो आर्डर माना जायेगा। मालिक ही नहीं बनेंगे तो शक्ति आर्डर क्यों मानेगी? मालिक अगर होशियार नहीं होता है तो सर्वेन्ट मालिक हो जाता है, मालिक सर्वेन्ट हो जाता है। अगर

आत्मा मालिकपन के स्वरूप में नहीं रहती है तो यह छोटी-छोटी कर्मेन्द्रियाँ हाथ-पाँव, आँख-मुख धोखा दे देते हैं। आत्मा की शक्ति के आगे यह मुख है क्या? लेकिन धोखा इसीलिए देते हैं क्योंकि हम मालिकपन भूल जाते हैं। तो मैं आत्मा राजा हूँ स्व का, इन कर्मेन्द्रियों का राजा हूँ तभी तो स्वराज्य अधिकारी कहेंगे। तो पहले स्व पर राज्य करो। यहाँ प्रैक्टिस होगी तभी विश्व का राज्य कर सकेंगे। यहाँ यह स्व का राज्य ही नहीं सम्भाल सकेंगे तो विश्व का राज्य क्या सम्भालेंगे? तो इसी निश्चय से अपने को बीच-बीच में चेक करो, चेन्ज करो। अच्छा।

“अपने संस्कारों को सच्चाई और स्नेह से ऐसा सम्पन्न बना लो जो सारी दुनिया की नज़र जाये”

(दादी जानकी - रिवाइज क्लास 2006)

नया युग लाने के लिए या उसमें आने के लिए अपने को क्या करने का है? बाबा ने वो पूरा आइना दे दिया है। हरेक बच्चे को अपने बाप से वर्सा लेने का हक है। बाप ऊँचे ते ऊँचा है, तो वर्सा भी ऊँचा अर्थात् सारे कल्प में वो राजाई चलती रहती है। तो हम कल्प पहले वाले बच्चों को भाग्यविधाता बाप ने इतना भाग्य जो बांटा है, उससे हम कितने भाग्यवान बने हैं।

बाबा कहते बच्चे, अब कोई भी पुराने संस्कार का अंश न रहे, इतना योग पॉवरफुल हो, इतना सच्चा प्यार भरा बाबा से सम्बन्ध हो, तो उसी याद के लगन की अग्नि संस्कारों को भस्म कर देती है। बाकी श्रेष्ठ संस्कार जैसे बाबा के हैं, वही संस्कार हमारे भी बन जायें।

बाबा जैसा त्याग और तपस्या हो, सेवाधारी भी बनना है तो बाबा जैसा। जैसे हमारे बाबा ने एक स्थान पर बैठे भी सारे विश्व को किरणें दी हैं। किसी भी देश में कोई आत्मा बैठी हो उन्हें अपना साक्षात्कार कराके खींच लिया है, तो कमाल है ब्रह्माबाबा के तपस्या की। सदा ही बाबा को एक ही लगन में देखा। ऐसे बाबा को देख अनेकों के पुराने कर्मबन्धन कट गये और कहने लगे कि मेरा बाबा। अनुभव तो यह है ना। अब अन्त का समय आ गया, अब अन्त घड़ी का ख्याल करना है, यह बाबा ने सिखाया है। ब्रह्मा बाबा कैसे त्यागमूर्त, तपस्वी मूर्त बनकर रहे, ऐसे हम भी बनें। हमारी सूरत से सबको बाबा का साक्षात्कार हो। हम सबके चेहरे पर रूहानियत और रमणीकता हो। सदा हमारे नसीब में खुशी तब है जब मेरे से सब खुश हैं, नसीबवान वो हैं जो खुद संतुष्ट है, उनसे सब सन्तुष्ट हों।

बाप जैसी सूरत मूरत हो। बाप जैसा निमित्त और निर्मानचित भाव हो। जिसके संग व सम्पर्क में आते हैं, उन जैसे न हों। मेरा स्वभाव संस्कार बाप जैसा हो। इसके लिए मीठा बाबा कहते हैं, जैसा हम संकल्प रखेंगे वैसा बाबा हमको बनायेगा। जरा-सा अंशमात्र भी संकल्प में शक्ति नहीं होगी तो रह जायेंगे। तो बाबा कहते हैं इतना जो ज्ञान का, गुणों और शक्तियों का खजाना, समय का भी बड़ा खज़ाना दिया है, उसको जितना सफल करेंगे उतना सफलता स्वरूप बनते जायेंगे। सिर्फ सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है यह कहने, सोचने से नहीं होगा। सफलता पाने के लिए सफल करना ही है। सोचने की बात ही नहीं है। कहना भी नहीं है, सोचना भी नहीं है। करना, कहना, सोचना बराबर हो। जो करना ही है तो पूछना किससे कि क्या करें? यह सोचना भी व्यर्थ है। बाबा कहते अब इस व्यर्थ को छोड़ो, सोचने का छोड़ो। हमारे अन्दर स्वच्छता, सच्चाई, श्रेष्ठता हो तो बाबा की कमाल देखो। बाबा कहेंगे बच्चे की कमाल, बच्चा कहेगा बाबा की कमाल।

बाबा ने ऐसे दिव्य नेत्र दिये हैं जो यह नेत्र ठण्डे हो गये हैं। यह नेत्र भी बड़े सुखदाई, सबको सुख-शान्ति देने वाले हैं। दृष्टि ऐसी हो, वायुमण्डल ऐसा हो, जो किसी को ऐसा अनुभव हो जो उसे वही बार-बार काम में आता रहे क्योंकि हम बच्चों को जो अनुभव है, वही शक्ति दे रहा है, वही चला रहा है, आगे उड़ा रहा है। कई बाबा के बच्चे चलते आ रहे हैं, पर स्पीड बड़ी स्लो है, क्योंकि उनके रास्ते में रूकावटें आयी हैं या औरों को रोक लिया है, इसलिए उन्हें लेट हो रहा है, आगे बढ़ने में। तो इस

मार्ग में अपना रास्ता भी क्लीयर हो और मेरे आगे बढ़ने में औरों को कोई तकलीफ न हो। ऐसा चलें जिधर साजन चले। इधर है मोहब्बत, उधर है जमाना... तो किधर चलें? जहाँ मेरा साजन चले। हम बाबा के साथ-साथ चलें। कोई साथ नहीं चले हैं तो अब दौड़ी पहनें क्योंकि मंजिल दूर है, टाइम थोड़ा है इसलिए दौड़ने के बिगर पहुँचेंगे कैसे! इसके लिए सेकेण्ड में पास्ट इज़ पास्ट करके हल्के हो जाओ तो दौड़ सकेंगे। इस तरह से जिसको एक बार दौड़ने की प्रैक्टिस हो गई ना, तो वो ऐसे ही इधर उधर अपना टाइम वेस्ट करता हुआ दिखाई नहीं देगा। दौड़ने वाला इधर उधर नहीं देख सकता, न ही वो किसके रास्ते में आता है। दौड़ने वाले के लिए तो ऑटोमेटिक रास्ता क्लीयर हो जाता है। अगर दौड़ना है तो जरा-भी किसी भी प्रकार का भारीपन न हो, नहीं तो दौड़ी नहीं लगा सकेंगे और ऐसे ही चलते रहेंगे तो रह जायेंगे। जैसे रेस के दौरान रास्ते में उबड़-खाबड़, पहाड़ी जैसी कई चीजें सामने आयेंगी। परन्तु जिसका लक्ष्य पक्का है वो कैसे भी जम्प लगाके भी दौड़ता रहता है और जीत हांसिल कर लेता है। उसे तो पता भी नहीं चलेगा कि इस पार से जम्प लगाके उस पार कैसे चले गये। उसके अन्दर से गूँजेगा कि वाह बाबा वाह! कमाल है बाबा आपकी! वाह! मेरे सर्वशक्तिवान बाबा। कैसी भी कठिन बात सहज चली गई, पता चला नथिंग न्यू। लेकिन बाबा कहते हैं कभी-कभी जम्प लगाते भी माया वहाँ भी नहीं छोड़ती है। माया वहाँ भी पहुँच जाती है। इतने न्यारे प्यारे रहने वाले को भी अपने तरफ खींचके किसी न किसी प्रकार की आकर्षण या उलझन में ले आयेगी। राइट सोचने नहीं देगी, अच्छा करने नहीं देगी। अधीनता के कारण परवश कर रांग काम कराती रहेगी।

बाबा कहते थे ओम् के अर्थ सहित उसी स्वरूप में रहो। मैं आत्मा देह सहित देह की सब बातों के भान से परे उस स्थिति में रहें, तब फिर बाबा कहेंगे उड़ते रहो, उड़ाते रहो। बाबा और हम आत्मा में कोई अन्तर न रहे, यह मंत्र मन में रखना पड़ेगा। अन्तर मिट जाये तो यह शोभा होगी। हमारे चितन या चिता से किसी को कोई प्राप्ति नहीं है, बल्कि इसमें एक सेकेण्ड भी समय गंवाया तो उससे स्वयं को ही नुकसान होगा। जैसे बाबा ने कहा

वैसे करने से प्राप्ति होगी। हर आत्मा को बाबा कैसा है वो अनुभव करा लो, इससे प्राप्ति है। तो हमारे दिल में, मन में, दृष्टि में और मुख में बाप समान बनने के आसार दिखाई पड़ने लगे। बाबा तो कहते मेरे से भी ऊँचे बनो, मास्टर सर्वशक्तिवान बनो पर मुझे गुप्त ही रहने दो। कोई भी शक्ति समय पर काम में न आवे तो ऑर्डर की शान नहीं है। हम सदा बाबा के साथ रहें और हमें जो करना है वो करते रहें, बाकी जिसे जो करना चाहिए वो आपेही करेंगे। सब करेंगे, हो जायेगा। बाबा बैठा है समय करा लेगा, सिर्फ इसमें सुस्ती न आये। कोई हीरो पार्टधारी को सुस्ती आये तो वो कैसा लगेगा।

नई सतयुगी दुनिया के लिए हमारे संस्कार सच्चाई स्नेह से सम्पन्न हो जो सबका ध्यान जाये कि यह कौन है? क्या कर रहे हैं, कहाँ जा रहे हैं? हमारे कर्म बताते हैं कि इनके विचार कैसे हैं? चलन बताती है, अन्दर क्या सोचता है? चलन-चेहरे का आधार ही है अन्दर सूक्ष्म सच्चाई और स्नेह। यह चेक करने की बात नहीं है, अन्तर को समझने की बात है। बाबा के साथ जो सच्चे प्यार का अनुभव है, वो इतना शक्तिवान है जो प्रकृति को भी सुधार करके सतोप्रधान बना देता है क्योंकि यह परमात्म शक्ति है, कम बात नहीं है। जिसके पास खजाने हैं वो कभी खाली दिखाई नहीं पड़ेगा। वो अन्दर ध्यान रखता है कि कहाँ व्यर्थ न जाये, ऐसा न हो जो मैं सम्पन्नता से साधारणता में आ जाऊँ। व्यर्थ गया तो बहुत कुछ गया। जमा ऐसा हो जो अपने आप वो एनर्जी काम करती रहे। वास्तव में अभी समय ऐसा है, जो जमा किया हुआ है वो सफल करने का। लेकिन अभी भी कोई कहे हमें तो अभी जमा करना पड़ेगा तो क्या कहें। तो बाबा ने काम दिया है सारे विश्व के कल्याण के निमित्त हो ना! इसमें हम हर एक को व्यक्तिगत रूप से क्या करना है, वो करो।

अपने निश्चय से निश्चित रहो तो राजाई है। हमारे पास निश्चय का बल ऐसा हो, जिससे सारी विश्व को परिवर्तन होने में शक्ति मिलें। इतना अपने निश्चय में विजय समाई हुई हो, तो लोग कहेंगे हे प्रभू तेरी लीला अपरम्पार है। हम आपस में एक दो को प्यार बांटते रहे, हाँ जी करते आगे उड़ते रहें। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

मुक्ति वर्ष मनाना है तो मैं-पन की पूँछ को जला दो (रिवाइज क्लास 1982)

1) पहले निश्चय हो कि बाबा मेरा साथी है, बाबा ही मेरा सारथी है और उनकी श्रीमत पर कदम-कदम चलने में ही मेरा कल्याण है। विजय है। जिसकी बुद्धि में माया आयी, वैर आया उसका एक न एक दिन सर्वश नाश हो ही जाता है जैसेकि दुर्योधन का

हुआ। तो बाबा हमें कहते कि हे अर्जुन तुम सदा प्रीत बुद्धि रहकर श्रीमत पर चलो और अपनी स्थिति को ऐसा अचल-अडोल बनाओ जो कभी तुम्हें माया हिला नहीं सके। अभी यह वक्त है ही अपने देह-अभिमान को तोड़ने का। इस देह-अभिमान के

नशे के कारण ही आपस में विरोध होता इसलिए बाबा कहते कि कभी भी अपना नशा नहीं दिखाओ। नशा विरोध पैदा करता, एकता को तोड़ देता और अपनी स्थिति को नीचे गिराता है क्योंकि उल्टे नशे वालों की बुद्धि में रहता कि “मैं” बड़ा बुद्धिवान हूँ। मैं बहुत अच्छा सेवाधारी हूँ। मैंने यह किया, यह किया.... यह मैंपन ही अभिमान की निशानी है। तो इस बार प्यारे बापदादा ने यही इशारा दिया कि हे महावीरों अब इस मैंपन की पूंछ को जलाकर ऐसा मुक्ति वर्ष मनाओ जो सारी पुरानी दुनिया (लंका) जलकर भस्म हो जाए।

2) हम शुरू से देखते आये हैं कि जब भी किसी को माया आयी है तो वह है मैंपन का अहंकार। मैं अर्थात् अहम् में सब आ जाता है। चाहे अपने बुद्धि का, अक्ल का, अपनी होशियारी का या कोई भी कार्य का, धन का नशा है, सर्विस का या जॉब का नशा है, प्राप्तियों का नशा है, लौकिक पढ़ाई का नशा है - यह सब नशे बड़े नुकसान-कारक हैं। तो यह देह-अभिमान के अनेक गुप्त नशे हैं, यह सब बाहर से दिखाई नहीं पड़ते हैं इसीलिए कई बार आता है गोपी बनना अच्छा है क्योंकि गोपी बनने में नशा नहीं आता है और जब अपने को गोप समझते तो नशा चढ़ता है - इसकी भी गुह्य फिलासॉफी है। जैसे उधव माना नशा। गोपी माना बाबा के लव में लीन, बाबा के लव में प्रीत बुद्धि। तो आप कभी उधव नहीं बनना प्लीज़। उधव बनेंगे तो जरूर कुछ नशा चढ़ेगा। हम सभी गोपियाँ हैं, भले आप लोगों को पाण्डव कहें परन्तु प्रैक्टिकल में हम सभी गोपियाँ हैं, चाहे भाई हो चाहे बहनें हो। गोपी बनने में बहुत आनन्द है, उधव बनेंगे तो आनन्द नहीं ले पायेंगे। हमें बाबा के सामने न उधव बनना है, न नशा दिखाना है।

3) हमें कभी किसी के प्रभाव में नहीं आना है। सबसे सूक्ष्म माया है प्रभाव। प्यारे भले रहो परन्तु उतना ही न्यारे रहो। पहले न्यारा रहकर फिर प्यारे रहो। प्यारे बनकर फिर न्यारे नहीं बनो, नहीं तो माया के प्यारे बन जाते, क्योंकि उस प्यार में न्यारेपन की शक्ति नहीं होती है इसलिए पहले न्यारा बनो फिर प्यारे बनो तब बैलेन्स बराबर रहेगा।

4) बेहद के त्याग में सभी सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का त्याग हो जाता है। त्याग माना त्याग, त्याग में प्रभावित होने की बात नहीं आती है। अगर आती है तो वह भी माया है। बाबा को जिसका जितना भाग्य बनाना है उतना बनायेगा तो हम क्यों किसी के पीछे प्रभावित हों। कई फिर सेवा करके अपने को ही “वाह रे मैं” समझते हैं अर्थात् मिया मिट्टू बनते हैं। मिया मिट्टू माना - अपने को बहुत होशियार समझना। परन्तु बाबा ने हमें सिखाया है कि तुम कभी किसी बात में भी प्रभावित न हो। कैसी भी आकर्षण करने वाली बात तुम्हारे सामने आवे, अरे जिस पर दुनिया प्रभावित हो वह

हमारे ऊपर कुर्बान है, हम क्यों किसी के ऊपर कुर्बान जायें। जिसको दुनिया पुकारे वह हमारे ऊपर कुर्बान है, इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए। तो इसके लिए हमें किसी के गुणों पर प्रभावित नहीं होना है। गुणवान है गुण लो, अच्छी बात है क्योंकि हमें सबसे अच्छे गुण लेना है। कोई की बुद्धि अच्छी है, उसकी बुद्धि का उपयोग करो। कोई का व्यवहार अच्छा है, उनसे कुशल व्यवहार की कला सीखो। किसमें लिखने का आर्ट अच्छा है, उससे वह आर्ट अपनाओ। सीखना हमारा फ़र्ज होता है परन्तु उसी पर प्रभावित होना, यह श्रीमत नहीं है - यह है माया।

5) अच्छे का गुण भले गाओ, कोई गुण सीखना है वह भी सीखो, परन्तु किसी के गुणों के ऊपर न्योछावर नहीं हो जाओ। यह है ज्ञान की गहराई, इसीलिए हम सबको कहते - ना कभी नशा रखो, ना कभी अपना अभिमान। ना कभी किसी पर प्रभावित हो, ना कभी किसी की आकर्षण में आओ। एक बाबा से सच्चे दिल की प्रीत हो, यही याद की यात्रा है। अगर किसी के भी नाम रूप से प्रीत हुई तो बाबा की याद में विघ्न जरूर पड़ेगा।

6) कई कहते हैं सूक्ष्म में माया आती है, संकल्प विकल्प आते हैं लेकिन माया तब आती है जब बाबा से प्रीत थोड़ी भी कम होती है। जरा भी बाबा से प्रीत बुद्धि की कमी हो गयी तो माया जरूर आयेगी। जब हमारा नया जन्म, नया बाप, नई माँ, नई पढ़ाई, नया आव्यूपेशन सब नया, नया है - फिर हम यह क्यों कहते हैं कि पुराना संस्कार है? क्या पुराने को मारा नहीं है? पुराना माना साँप, साँप को जिन्दा रखेंगे तो फूँक तो मारेगा ही। हमें पुराना क्यों सोचना चाहिए, क्या करें - यह मेरा पुराना स्वभाव है ना! हमने कभी ब्रह्मा बाबा के मुख से यह शब्द नहीं सुना जो बाबा कहे मेरा पुराना संस्कार है। रात-दिन बाबा के संग रहे, पुराना स्वभाव-संस्कार-संकल्प क्या होता - यह कभी हमने नहीं देखा इसीलिए आज पहले हम सब इस बात का संकल्प करें कि पुराना संस्कार मर गया। हमारा संस्कार नये ब्राह्मण जन्म का है।

7) सवेरे उठते हैं तो उठते ही बाबा सामने आता है या पुराना संस्कार सामने आता है? पिछले जन्म को मार कर उसका श्वास भी निकाल दो। पुराना संस्कार कहते हो माना अभी तक श्वास रखकर पालना करते हो, साँप को दूध देते हो कि हे साँप तू दूध पी और फूँक मार। क्यों कहें पुराना संस्कार है, जन्म नया, परिवार नया, पढ़ाई नई, हमें जाना नई दुनिया में है, सेवा हमारी नई, फिर हम पुराना-पुराना क्यों पालकर बैठे हैं इसलिए इन पुराने संस्कारों को मारकर सच्चा-सच्चा मुक्ति वर्ष मनाओ। अच्छा।